बुद्धि बिलास

(बाल पहेलियां)

बूझो
और
समझो

डॉ. सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी
ग्राम/ पोस्ट पुजारगांव (चन्द्रवदनी)
हिन्डोलाखाल, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

© संपादक : डॉ. सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी
आवरण : RAMESH BADONI

प्रथम संस्करण : अगस्त 2013

मूल्य : 100/– रुपये

मुद्रक :
मीडिया प्लस
77, सिद्धेश्वर एन्कलेव, केदारपुर देहरादून।

सर्वाधिकार सुरक्षित स्वत्वाधिकारी की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक या इसके किसी भाग का पुनर्मद्रुण, छायाप्रति अथवा अन्य माध्यम से हस्तान्तरण नहीं किया जा सकता है।

अपनी बात

बालक की परीक्षा के लिए अनेक प्रकार की विधियाँ अपनाई जाती हैं जिनमें पहेलियों का महत्वपूर्ण स्थान होता है । यद्यपि हम सभी वस्तुओं,स्थानों,आविष्कारों, प्राणियों से भलीभांति परिचित होते हैं, लेकिन जब पहेली के माध्यम से उनके बारे में पूछा जाता है, तो अपनी बुद्धि की क्षमता के आधार पर ही उत्तर प्राप्त होते हैं। यह कोई नई न होकर प्राचीन परम्परा है। मुझे याद है जब हम बच्चे थे तो अक्सर जाड़ों की रात में गांव के अनेक बच्चे, जवान, बूढ़े आग सेंकते या जब तक नींद न आ जाये बिस्तर पर लेटे-लेटे बारी-बारी से पहेलियाँ जिन्हें स्थानीय बोली में **"अखाँणा-पखाँणा"** नाम से जाना जाता है पूछते रहते थे। बुद्धि परखने का यह एक सशक्त तरीका है। इससे बच्चे का धरातलीय ज्ञान, ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता आदि का सही ढंग से मूल्यांकन होता है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु मैंने बच्चों के लिए कुछ ऐसी पहेलियाँ रची जिससे प्राणियों, आविष्कारों, वनस्पतियों, दैनिक उपयोग की वस्तुओं, प्राकृतिक पदार्थों, तीज-त्यौहारों, स्थलों से उनका किसी न किसी रूप में देख, सुन, पढ़ या अपनाकर जानकारी मिली हो उन्हीं पर केन्द्रित पहेलियों को मैंने इस पुस्तक में स्थान दिया।

मेरा एक लक्ष्य बच्चों के भीतर वैज्ञानिक सोच को पैदाकर उसकी शोध की भूख जगाना भी हैं, ताकि बच्चे उस बीज को वृक्ष बनाकर देश - दुनियाँ में ऐसा कर दिखाये जैसा अब तक न हुआ हो। हम अपने बच्चों को ऐसा परिवेश दें जिनसे उनका मनोरंजन भी हो और ज्ञानार्जन भी, साथ ही जिस समाज में हम रहते हैं उसकी हर एक

वस्तु से बच्चों को परिचित कराना भी मेरा लक्ष्य रहा और आगे भी रहेगा। बाल मनो दशा को मध्यनजर रखने का मैंने पूर्ण प्रयास किया और तद्नुसार पहेलियों को मूर्तरूप दिया।

इस पुस्तक को पाठकों तक पहुँचाने में मैं अकेला असमर्थ था यदि अभिन्न मित्र सोहन सिंह रावत, अपना सहयोग प्रदान न करते। मैं अपने भूतपूर्व शिष्य चण्डीप्रसाद बडोनी, **रमेश बडोनी,** दामाद के. आर. उनियाल का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके सद प्रयास / सहयोग से इस कार्य को करने में मैं सफल हो सका।

इस कार्य में मैं कितना सफल रहा इसका निर्धारण सुधि पाठकों और उन प्यारे बच्चों को करना है जिनके सर्वतोन्मुखी विकास को सोचकर यह पुस्तक तैयार की गई है।

यद्यपि हमारा यह प्रयास था कि कुछ अशुद्ध न छपे, फिर भी यदि अशुद्धि रह गयी होतो अन्यथा ने लेते हुये सुधारात्मक सहयोग और पुस्तक की प्रतिक्रिया से अवगत करायेंगे। मैं अन्य उन सभी लोगों का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिनका किसी न किसी प्रकार से इस कार्य को करने में मुझे सहयोग मिला।

शुभाकांक्षी

डॉ. सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी

अनुक्रमणिका

प्राणी	7
आविष्कार	18
वनस्पतियाँ/ फल–फूल/ अन्न	35
दैनिक प्रयोग की वस्तुयें	44
भूगोल/ खगोल/ प्राकृतिक पदार्थ	63
शरीर के अंग	71
विविध	74

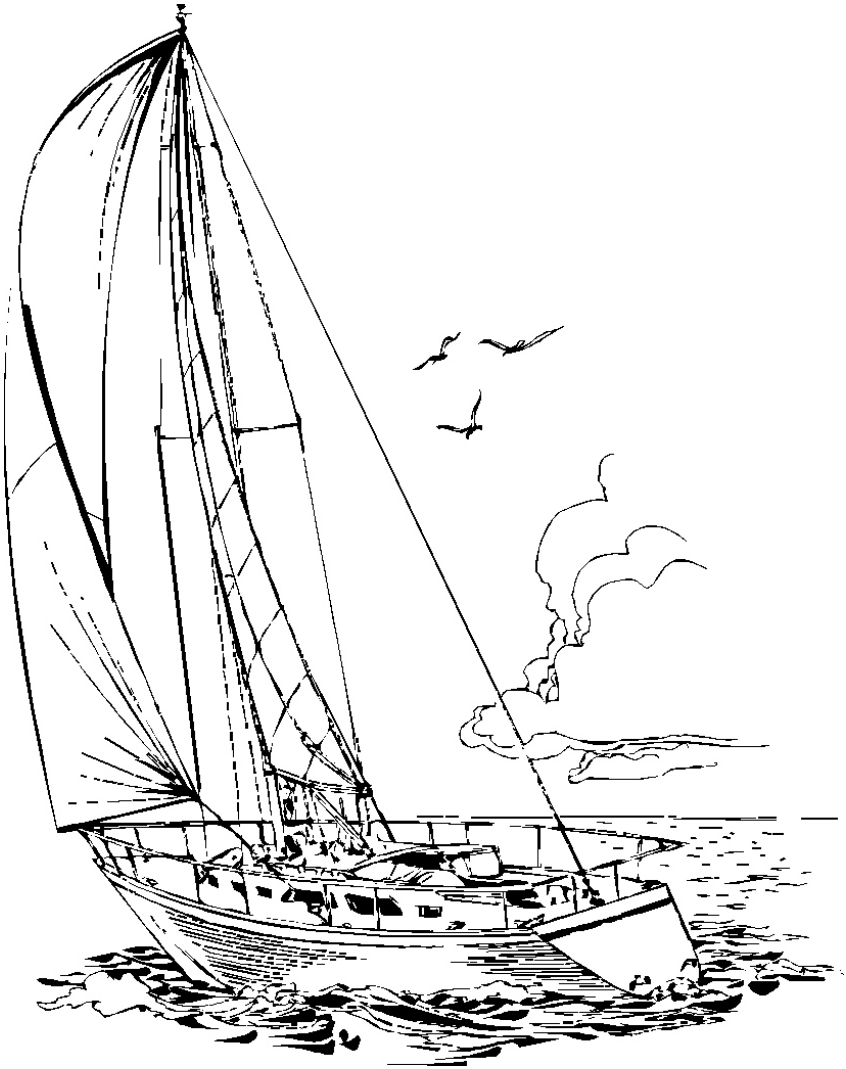

प्राणी

1

काले रंग का उसका तन,
अपशकुन मानते उसको जन।
कड़वी लगती उसकी वाणी,
खाता पूड़ी पीता पानी।

2

चोंच है उसकी मोटी-लाल,
और हरे रंग की खाल।
जाता उड़कर इधर-उधर,
उसे पालते नारी-नर ।।
बोलता बार-बार वह राम,
कई तरह के करता काम।
उसे कहेंगे बुद्धिमान,
जो बतलाये उसका नाम।।

3

पहले वह संगीत सुनाता,
करता मुंह से मार।
एक बार से मन नहिं भरता,
आता बारम्बार।।
काया उसकी छोटी होती,
पर तखड़ी करता मार।
कई उपाय करने पर भी,
मानव उससे जाता हार।।

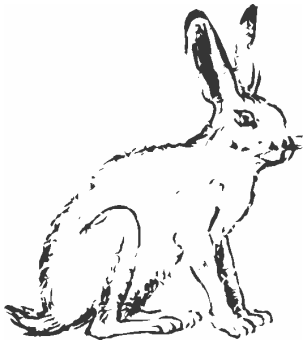

4

हर एक के घर में आते,
चोरी कर-कर के खाते।
दूध उसे बहुत है भाता,
अक्सर म्याऊँ-म्याऊँ है गाता।।

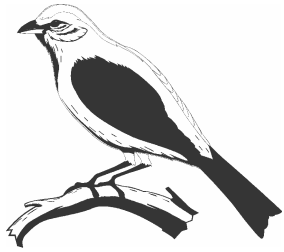

5

प्रतिक्षण रहती है ओ जल में,
छुप जाती है ओ पलभर में।
बदन लचीला चिकना भारी,
अन्दर हड्डी जैसे आरी।।
लचक-लचक कर वह चलती है,
गन्दे भोजन पर पलती है।
कोई बड़ी कोई छोटी,
पतली काया किसी की मोटी।।

6

नहलाते उसको सुबह- शाम
काले रंग का होता चाम।
उसी काम की जिसकी गाय,
स्वादिष्ट बनाती है वह चाय।।

7

बच्चों को वै बहुत हैं भाती,
जब उनके वै पास हैं आती।
रंग-रूप और उनकी चाल,
मन खिल उठता छूकर खाल।
बदन सुकोमल स्फूर्ति तन में,
नहीं दिखती ऐसी जन में।
फूलों से करती स्नेह,
फूल सरीखी होती देह।।

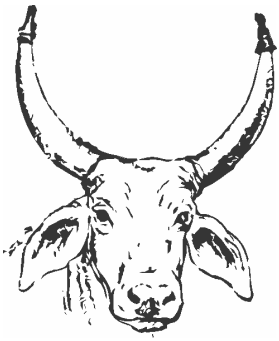

8

मन मोहक हैं उसके रंग,
इठलाती फूलों के संग।
बच्चे जब पकड़ने जाते,
हाथ न लगते फुर्र उड़ जाते ।।

9

गधे सरीखे उसके कान,
बहुत बड़ी नहीं है जान।
करता खेतों की वह चोरी,
होती देह किसी की गोरी।।
कोई भूरे कोई काले,
करते विचरण उपवन–नाले।
इनकी चलने की गति तेज,
[illegible] पड़ती रेज।।

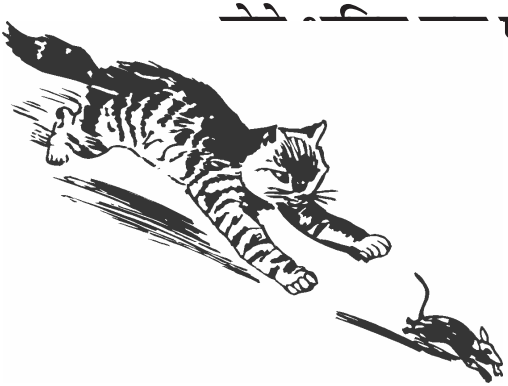

10

उस पक्षी का नाम बतावो,
जिसके सिर पर पैर।
नहीं रखती है वह कभी,
किसी मानव से बैर।।

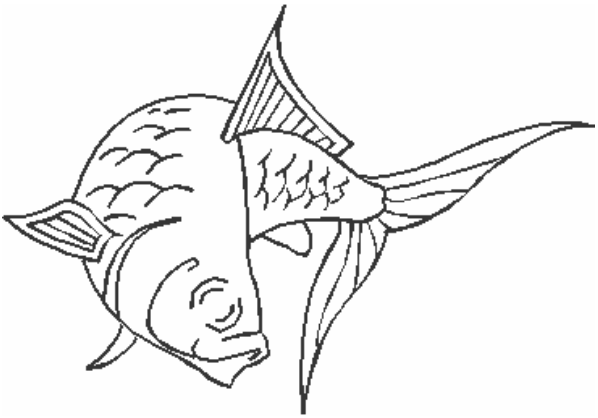

11

सींग नहीं पर होते कान,
चार पैरों की है वह जान।।
करते सवारी ढोते माल,
काम करके छिल जाती खाल।।
पैरों में लोहे की नाल,
गर्दन में होते लम्बे बाल।
खाता चना- चारा घास,
होता नहिं वह सबके पास।।

12

चार पैर यों जैसे खम्भ,
अपने पर उसको है दंभ।
काले रंग की तन की खाल,
सभी नहीं सकते हैं पाल।।
सूँड से पेड़ों को तोड़ता,
आसानी से उन्हें मोड़ता।।
शरीर है शक्ति का भण्डार,
फिर भी खाता मानव मार।।

13

नहीं पालते रहते पास,
करते नित शक्ति का ह्रास।
पता नहीं कब आते घर में,
करते मार वदन और सर में।
कंघी मारकर सर से झड़ते,
खून पी-पीकर बढ़ते।
बिन बुलाये ये मेहमान,
इनसे घटती सबकी शान।।

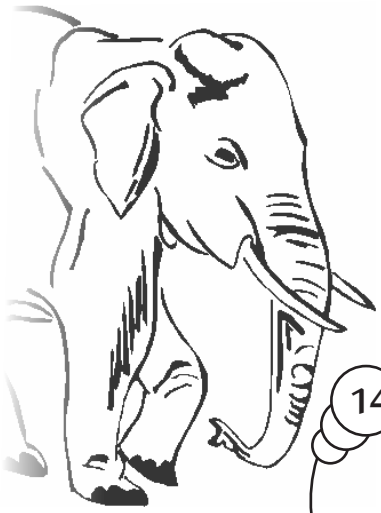

14

संग-संग करते दोनों काम,
मिलते तब जब खर्चों दाम।
टिकी इन्हीं पर खेती-बाड़ी,
खींचते इक्के-दुक्के गाड़ी।।

15

बाँग देता प्रातः काल,
सिर पर उसकी टोपी लाल।
सफेद भूरा काला रंग,
चलते हैं ओ सब संग-संग।।
अण्डे से होते हैं पैदा,
पालने पर देते हैं फायदा।
उनका कोई करते वध,
मत मारो करो न ऐसी हद।।

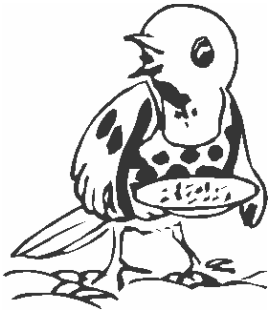

16

गन्दी चीजें उसको भाती,
उड़कर उनके ऊपर आती।
भिनभिनाती रहती हरपल,
गन्दा करती भोजन और जल।।

17

लाती तिनका-तिनका चुनकर,
घर बनाती उनको बुनकर।
पहले अण्डे बाद में बच्चे,
जब दिखते लगते ओ अच्छे।।
भ्रमण करते हैं पंख पसार,
ढूँढ - ढूँढ लाते आहार।
इनकी रक्षा मानव धर्म,
समझें इनका जीवन मर्म।।

18

उड़ती वह पसार के पंख,
छेड़ने पर मारती है डंक।
उसके अन्दर बड़ी कला है,
करती वह मानव का भला है।।
औषधी मधुर हमको है देती,
उसके बदले कुछ नहिं लेती।।
परोपकार है उसका कर्म,
इसे वह समझती अपना धर्म।।

19

देती दूध खाती घास,
करती है रोगों का नाश।
उसके कई रूप और रंग,
पूजते उसके सारे अंग।।
मिला है उसको माँ का दर्जा,
उसे पालने में नहिं हर्जा।
कुछ जन करते उसका वध,
मत करना अब ऐसी हद।।

20

पीता दूध उगलता विष
छेड़ो उसको करता फिस्स।
सारे प्राणी उससे डरते,
मारे डंक तो तब हैं मरते।।
बदन लचीला लम्बीकाया,
सारे जग में इसकी माया।
उस देव का यह आभूषण,
भूत-पिशाच जिनके हैं गण।

21

सुनाता कानों को ओ सुर,
और सुनाकर उड़ता फुर्र।
गर्मी में रहती उसकी धूम,
बार-बार तन रहता चूम।।
कयी बार वह नींद तोड़ता,
डरकर मानव वस्त्र ओढ़ता।
साढ़े तीन अक्षर का नाम,
डंक मारना उसका काम।

22

उसे देखते -सुनते हैं,
देख सुन मन में गुनते हैं।
बढ़ता है मानव का ज्ञान,
जो मन लगाकर देते ध्यान।
उसके कई आकार-प्रकार,
दिल के अन्दर होते तार।।
अनोखी यह विज्ञान की खोज,
हर उम्र का देखता रोज।।

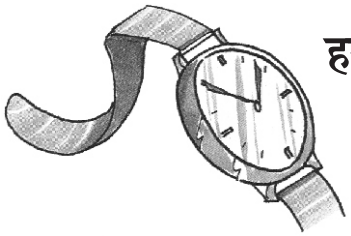

23

दोनों हाथ से वह है बजता,
गले में डालकर वह सजता।
दायें-बायें रहता चाम,
तीन अक्षर का उसका नाम।।

24

घण्टों-घण्टों करते बात,
पर कोई होता नहिं साथ।
बड़े काम की है ये चीज,
पर होता नहिं इसका बीज।।
जम नहिं पाता यह धरती पर,
प्रयोग करता है मानव हर।
इसके बिना अब रह नहिं पाते,
[illegible] हर जगह हैं जाते।।

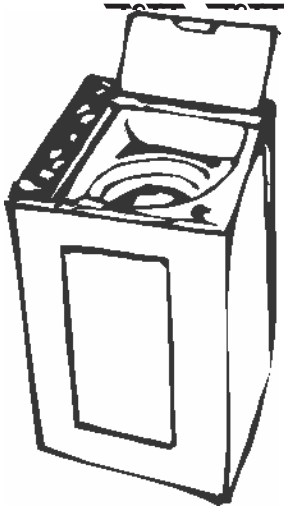

25

लैक्टोमीटर उसका नाम,
बताओ क्या करता है काम?

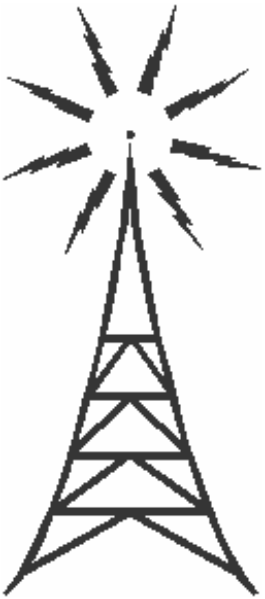

26

कई तरह का काम है करता,
रहता हर के पास।
आये दिन दुनियाँ के मानव,
बन रहे उसके दास।।

27

रात-दिन चलते उसके पैर,
नहीं किसी से उसका बैर।
हाथ-मेज -दीवार पर रहती,
अपनी बोली में वह कहती।।
मेरी तरह गतिमान बनो सब,
प्रगति करोगे आप सभी तब।
कौन है वह ऐसा ज्ञानी?
थोड़ा भी जो नहिं अभिमानी।।

28

क्षण में आती-जाती
आकर सबको भाती
करती कई तरह का काम,
देना पड़ता उसका दाम।।
प्रगति सारी उस पर टिकती,
बहुत दूर तक वह है बिकती।।
जन्म देता है उसको जल,
बनता उससे सुखमय कल।

29

तीन अक्षर का उसका नाम,
गगन में उड़ना होता काम।
शरद ऋतु में इन्हें उड़ाते,
टकराने पर उन्हें छुड़ाते।।
बच्चों को ये बहुत हैं भाते,
इन्हें उड़ाने छत में जाते।।
होते विविध आकार और रंग,
आकाश में जीतना चाहते जंग।।

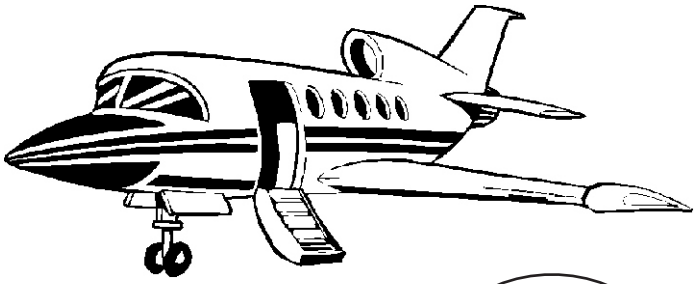

30

ए. एच. टेलर, यल. सी. यंग,
खोज की इन्होंने रेडियो तरंग।
वायुयान की दिशा और दूरी,
जानकारी मिलती इससे पूरी।।
तीन अक्षर का उसका नाम,
उल्टा सुल्टा एक समान।
बतलाता वह आने वाला,
कितनी दूर है जानेवाला।।
आकाश मार्ग का है यह यंत्र,
अरि कर नहिं पाता षड्यंत्र।
यह विज्ञान की खोज बड़ी है,
प्रगति की यह एकलड़ी है।।
इसके बल पर विजय हैं पाते,
दिखते वायुयान जब आते।

31

जो उसके आगे आता है,
वह उसके अन्दर जाता है।
हरपल मानव देखता जिससे,
बनती अमर निशानी इससे।।
रंग-ध्वनि से यह भरपूर,
करता काम निकट और दूर।
यादगार का यह है साधन,
पर खर्च करना पड़ता है धन।।
विज्ञान की यह बहुत बड़ी है देन,
इसके विकास की [illegible] है [illegible]।।

32

सवारी का करता हूँ काम,
रात-दिन सुबह और शाम।
हूँ एटीन ओहमिसेन की देन,
चलने से नहिं बनती लेन।।
चाल बहुत तेज है मेरी,
नहिं करता मार्ग में देरी।
घण्टों का काम मिनटों में करता,
रिस्क बहुत है पर नहिं डरता।।

33

चार्ल्स बैबेज ने की मेरी खोज,
काम आता हूँ मैं हर रोज।
दफ्तर बैंक दुकान हो या घर,
करता है प्रयोग मेरा हर।
रोजगार का मैं हूँ साधन,
सब करते मेरा अभिवादन।
मेरे अन्दर बहुत है ज्ञान,
ओ सारे सीखते जो देते ध्यान।।

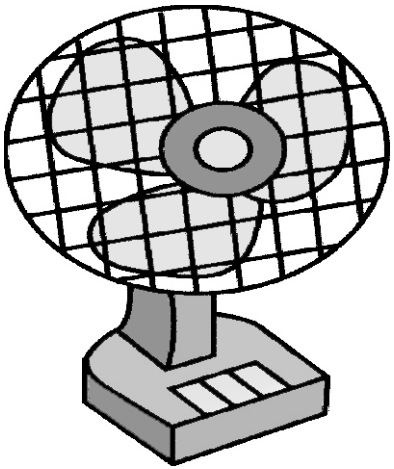

34

जे. गुटेनबर्ग ने किया कमाल,
हर गांव शहर में मचा धमाल।
पुस्तक पत्रिका पम्पलेट अखबार,
पढ़ने को मिलते रोज हर बार।
उस यंत्र की देन यह सुविधा,
नाम बताओ कुछ नहिं दुविधा।
जो बच्चा सही बतलादेगा,
मैं भी कुछ हूँ जतला देगा।

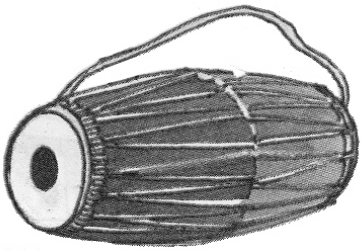

35

बी. पास्कल की खोज से,
मिली मानव को सुविधा।
जोड़ घटाना गुणा भाग में,
नहीं रहीं अब दुविधा।
बटन दबा - दबाकर,
करते हैं कठिन सवाल।
घण्टों का काम सेकिण्ड में ,
कर लेता तत्काल।।
छः अक्षरों के मेल से
बना है उसका नाम।
जो बतलाये उस नाम को,
करेंगे उसे सलाम।।

36

चलता है पर पैर नहीं,
उसका किसी से बैर नहीं।
बिना बिजली के वह बेकार,
करता काम जब जुड़ते तार।।
गर्मी से इसकी है कुट्टी,
देता है तपन से छुट्टी।
करता जाड़ों में विश्राम,
आये दिन बढ़ रहे हैं दाम।।

37

गोल होते हैं उसके पैर,
कराता है आकाश की सैर।
तीन अक्षर का उसका नाम,
उल्टा-सुल्टा एक समान

38

लम्बा होता है आकार,
और अधिक होता है भार।
कई सौ पैर उसके होते,
कोई बैठकर उसमें सोते।।
यात्रा के आता है काम,
पर पड़ता पहले उसका दाम।
दो अक्षर का उसका नाम,
चलती रहती सुबह और शाम।।

39

अन्न को खाकर उगलता फिर,
चलता रहता घिर-घिर-घिर।
गदेरे में उसका स्थान,
करते जिसका सब सम्मान।
प्रत्यक्ष देव सब उसे जानते,
देता चट फल यह मानते।

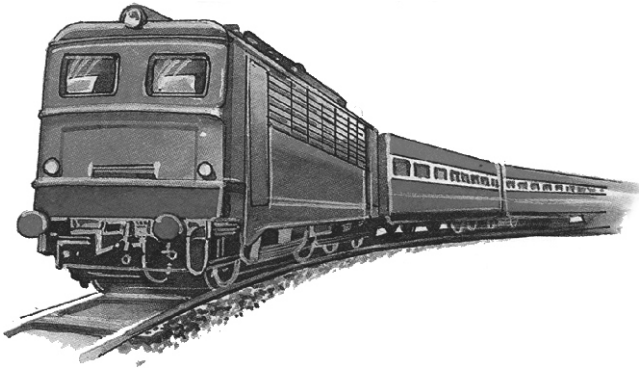

40

ए. एल. ब्रेगुयेट ने की ऐसी खोज,
जिसका सभी उपयोग करते हैं रोज।
अपने अंग में उसे करते हैं धारण,
समय पर होते काम उसके कारण।

41

पाँच अक्षर का उसका नाम,
कम सुनने वालों के आता काम।
लगाता उसे जो अपने कानों पर,
सुनायी देती फिर उसे बात हर।
बड़ा सुन्दर है उसका काम,
बताओ जो उसका है नाम?

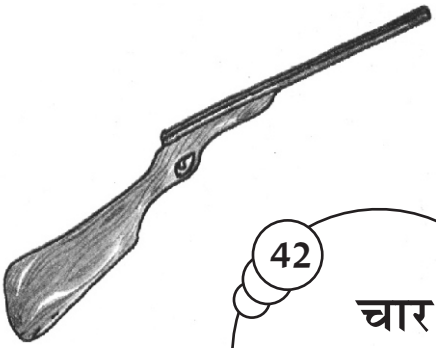

42

चार पैरों से चलती रोज,
बहुत रहता है उस पर बोझ।
आँखें रहती आगे-पीछे,
और चारों तरफ में शीशे।
सफर बैठकर होता तय,
उसके अन्दर कुछ नहिं भय।।
कई तरह का ढोता बोझ,
रात-दिन सफर करती है रोज।।

43

कई बार अंग अंग दबाओ,
टाँग को उसकी रक्खो हाथ।
थोड़ी देर करो प्रतीक्षा,
फिर करने लगता है ओ बात।।

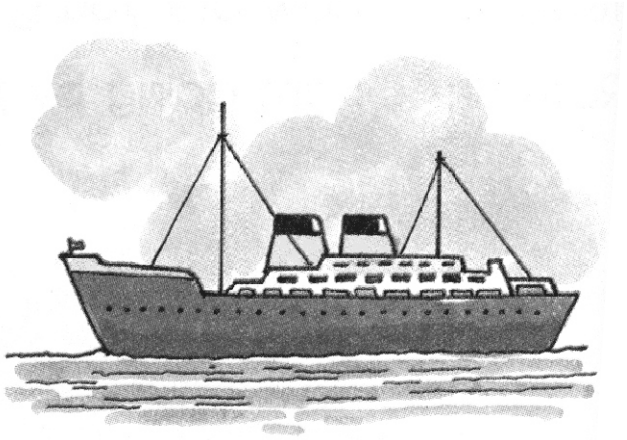

44

करती कयी तरह का काम,
पर नहिं कहती मुँह से राम।
बिन मानव के कुछ नहिं करती,
दरिद्रता को यह है हरती।।
इसके नाम में अक्षर तीन,
प्रथम कटे तो बनती शीन।
बिना मध्य के बनता मन,
उसे समझता साक्षर-जन।।
न रहे अन्त तो स्याही बनती,
पर वह अक्षर को नहिं जनती।
बताओ बच्चों उसका नाम,

45

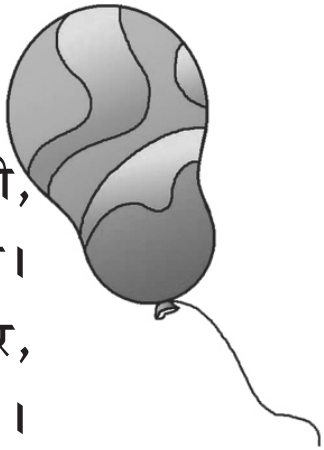

लोहे की खाता हूँ गोली,
ओर जोर की बोलता बोली।
काठ और लोहे का शरीर,
काम वही जो करता तीर।।
मुँह है मेरा लम्बी नाल,
प्राणी का आता इससे काल।
प्राण नहीं पर हरता प्राण,
उसी तरह जैसा कि बाण।

46

काँच से होता भरपूर,
अन्धकार को करता दूर।
पर विद्युत जब देती साथ,
तभी जाकर बनती है बात।।
अण्डाकार तो कोई गोल,
ये मिलते हर जगह हैं मोल।
ढाई अक्षर का इसका नाम,
उल्टा सुल्टा एक समान।।

47

दुनियाँ को देती प्रकाश,
अपना करती है ओ नाश।
तनकर ओ खड़ी है रहती,
परोपकार में दुःख है सहती।।
जल-जल कर घटता है तन,
पर कुण्ठित होता नहि मन।
जब तक रहता तन में दम,
पर हित को करती नहिं कम।।

48

आग भरी है उसके तन में,
जैसे जहर सर्प के फन में।
सब रहते हैं मिलकर के,
होते सदस्य सब घर के।
रगड़ कर देती हैं प्रकाश,
होता अन्धकार का नाश।
मरते सभी एक-एक कर,
उन्हें मारता है हर नर।।

49

पीती तेल खाती अन्न,
बिल्कुल गोल है उसका तन।
जब खाती है करती शोर,
बहुत अधिक होता है जोर।।
कोई बिजली से है चलती,
धान कूटती, दालें दलती।
मानव उसे देखता रहता,
पर उससे कुछ भी नहिं कहता।।

50

आग लगे तो बरसते फूल,
अन्धकार को करता दूर।
इसे जलाते लोग हैं तब,
खुशियों का माहौल हो जब।।

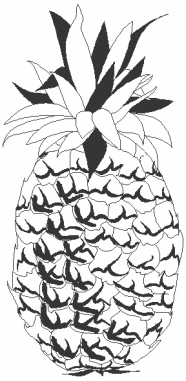

51

आदर सूचक से बनता नाम,
आता है पूजा के काम।
मार-पीट कर जाते जब,
प्रसाद रूप में खाते तब।।
ऊपर लगता है यह फल,
अन्दर रहता उसका जल,।
हर जगह नहिं, होता पैदा,
पर देता है सबको फैदा।

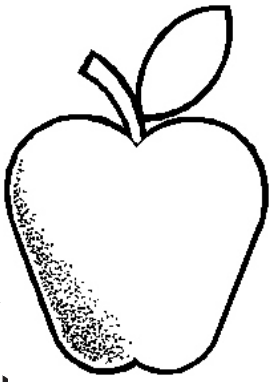

52

लाल या सफेद होता है रंग
कई सौ भाई रहते संग।
इससे बढ़ता तन का रक्त,
बाजार में मिलता हर वक्त।।
किसान की मेहनत का फल,
सुखमय बनाता सबका कल।
जो करता इसका प्रयोग,
उसके तन के मिटते रोग।।

53

अन्दर गुठली बाहर छिलका,
बीच में उसका रस है भरा।
पककर दिखता है ओ पीला,
कच्चे में उसका रंग हरा।।

54

हवा पानी फूल और फल,
देता हमको वह हर पल।
विनम्रता का वह प्रतिरूप,
सहता अन्धड़ जाड़ा धूप।।

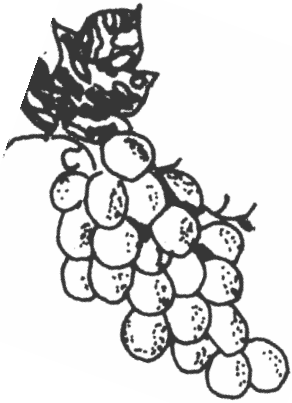

55

रंग सफेद आकार है गोल,
तब मिलता जब करते तोल।
उसमें होते तत्व अनेक ,
अन्दर कीड़े काटो देख।।
खाने के आता है काम,
हर दिन घटते-बढ़ते दाम।।
मिलाकर मसाले और नमक,
स्वाद में तब आती है चमक।।

56

गोल-गोल से गुच्छे दार,
लगते बेल पर ये हजार।
बूढ़े - बच्चे सब हैं खाते,
इन्हें खरीदकर भी लाते।।

57

तीन अक्षर का उसका नाम,
आती है पूजा के काम।
औषधीय गुण उसमें होते,
प्रबुद्ध जन उसको हैं बोते।।
पर्यावरण की होती है शुद्धि,
निर्मल बनती उससे बुद्धि।
बसती वह विष्णु के धाम,
आप बताओ उसका नाम।।

58

चार अक्षर का उसका नाम,
आता है सब्जी के काम।
बाहर खुरदरा अन्दर बीज,
प्रतिदिन खाकर आती खीज।।

59

पहले हरा बाद में लाल,
स्वादिष्ट बनती सब्जी-दाल।
नाम के पीछे, मेंढ़क बोल
अक्सर होते हैं ये गोल।।
अन्दर इनके होते बीज,
बड़े काम की है ये चीज।।

60

हंसता फूल एक हमने पाया,
नेहरू जी को था वो भाया।
हर मौसम में वह खिलता है,
उससे लाभ बहुत मिलता है।
लक्ष है जीवन का परोपकार,
मानता नहीं कभी वो हार।
बिताता जीवन काँटों के संग,
फिर भी खुश दिखता है हर अंग

61

जन्मते एक साथ कई भाई-बहिन,
पककर मीठे पर क्या कहने!
एक जगह लगते सब पेड़ के ऊपर।
कटकर गिरते हैं जो भू पर ।।
छिलका निकाल कर उसको खाते।
कोई बाजार से खरीदकर लाते।।

62

खुरदरा एक होता है फल,
उससे मिलता तन को बल।
दुःख हरता यह तन के तब,
धारण करते हैं इसको जब।
साधू-सन्त करते हैं धारण,
श्रद्धा बढ़ती है इसके कारण।
करें इस पर और भी शोध,
और सबको करायें उसका बोध।

63

जो इसे काटता रो पड़ता है,
कोई बहुत जल्दी सड़ता है।
हर एक दुकान से इसको लाता,
किसी को यह बहुत ही भाता।
ढाई अक्षर का इसका नाम,
अक्सर सलाद के आता काम।
किसान की मेहनत का यह फल,
बचपन में पीता है यह जल।

64

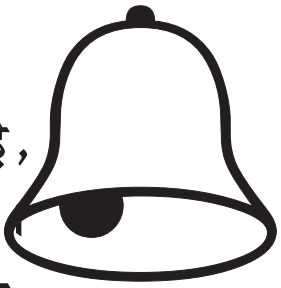

मानव से लेकर के घोड़े,
खाते उसको थोड़े-थोड़े।
सफेद-भूरा कोई काला,
बेचता उन्हें राशन का लाला।।
पकाते पाउडर के संग छाँच,
उल्टा कर कहते हैं नाच।
किसान की मेहनत का फल,
उसे चाबकर पीते जल।।

65

हर भाई होता है लम्बा,
मां मोटी लगती ज्यों खम्बा।
खाते उसको सभी चाव से,
लाते सस्ते-महंगे भाव से।।
पीला हो चाहे रंग हरा,
मीठापन रहता उसमें भरा।।
उसे खाते सब बूढ़े-बच्चे,
लगते गन्ना सबको हैं अच्छे।।

66

पत्तों के मिलने से बनती,
हरे रंग की बाल।
यदि उसका उपभोग करें तो,
बच सकती है दाल।।

67

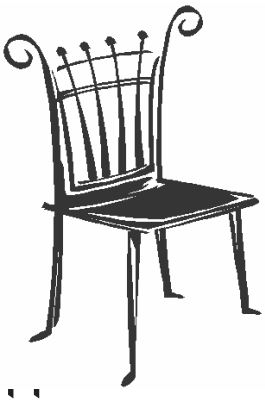

होती वह प्राणी से पैद
रंग में काला कोई मैद
जाड़ों में आता है का
बहुत बढ़ गये उसके दाम..
मेहनत इसमें बहुत लगाते,
तब जाकर के ठण्ड भगाते।।
रोजगार भी इनसे मिलता,
कोई बुनता कोई सिलता।।

68

पानी उसके नीचे रहता,
खुद वह पानी में है बहता।
चक्कर बार-बार मारता,
पुण्यात्मा-पापी को तारता।।
पर करता वह तब है काम,
जब लेते लोगों से दाम।।
दो अक्षर का उसका नाम,

69

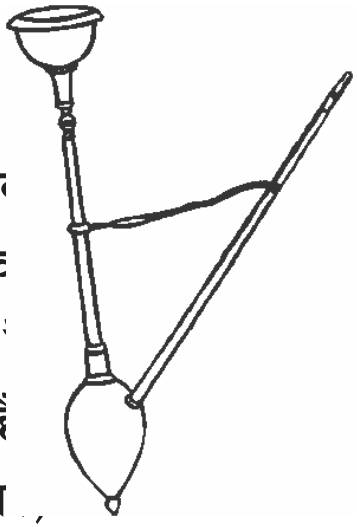

खुद तो होती वह निर्जी
पर बुलाती है ओ जीव
अपने घर में डटी रहती
दिनभर वह कहती रहती
निर्दोष बेचारी खाती मा
पर नहीं मानती है ओ हार।
जब उसकी आज्ञा को पाते,
तब सारे जन घर हैं जाते।।

70

काला कलूटा दोनों ओर,
करता काम रात और भोर।
भरता वह मानव का पेट,
निर्धन हो चाहे हो सेठ।।
तपता परोपकार में रोज,
मानव की यह अच्छी खोज।।
आकार में होता है गोल,
जब खरीदते तब करते तोल।।

71

चार टांग पर खड़ा होकर,
कुर्सी के आगे रहता।
थाली - झोला, कपड़ा लत्ता,
सबका बोझ है सहता।।
उसके बिना कुर्सी में बैठकर,
कोई लिख-खा नहीं सकता।
उसका कोई कुछ भी करे,
बेचारा कुछ भी नहिं कहता।।

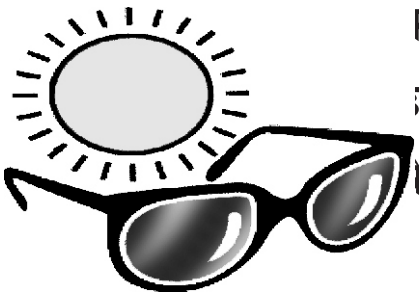

72

रंग-बिरंगी लम्बी काया,
बड़ी विचित्र है इसकी माया।
लिखती अंक, चित्र अक्षर,
इसके बल पर बनते साक्षर।।
घिस-घिस कर आती है पीछे,
टूटती नोक गिर जाय जो नीचे।।
बच्चों की यह जीवन साथी,
इसके बल बना लेते हाथी।।

73

मिट्टी से बनता शरीर,
अन्दर उसका रहता नीर।
यदि हाथ से जाये छूट,
निश्चित वह जाता है टूट।।
बड़े यत्न से उसको बनाते,
आग में रखकर उसे पकाते।।
मटमैला होता है रूप,
सहलेता है वर्षा-धूप।।

74

आंखों पर जब वह चढ़ते,
बूढ़े तब पुस्तक पढ़ते।
कोई चपटा कोई गोल,
लेते हैं सब उनको मोल।।

75

सबसे ऊपर रहती है,
कभी नहीं कुछ कहती है।
इसके कई रंग और रूप,
लग नहिं पाती उससे धूप।।
मानते उसे इज्जत की चीज,
किसी को पहनकर उठती खीझ।
उसे देख होती पहचान,
कोई उसे समझते हैं शान।।

76

कई कष्ट वह सहते हैं,
धरती पर वह रहते हैं।
इज्जत उनको कोई न देते,
अक्सर उनको महंगा लेते।।
पैरों की ये रक्षा करते,
भूत-प्रेत इनसे हैं डरते।
सभी देश हर वर्ग के लोग,
करते हैं इनका प्रयोग

77

रहती तो ओ नीचे है,
पर बड़ा होता उसका नाम।
उसे प्राप्त कर एक जैसा,
नहिं करते हैं मानव काम।।

78

दुनियां में है वह अमृत,
उसमें छिपा हुआ है घृत।
विटामिन युक्त पूर्ण आहार,
करते सेवन बारम्बार।।
तरल पदार्थ है रंग सफेद,
हो जाते हैं उसके कई भेद।
पहले मीठा बाद में खट्टा,
मथने पर बन जाती मट्ठा।।

79

रात भर उसको लिखते रहते,
प्रातः जाता है निकट-दूर।
कब आयेगा उसे देखने,
लगा रहता लोगों का सूर।।
मानों जन-जन की भूख-प्यास,
मिटती है उसे प्राप्त कर।
जैसा जो चाहता है उससे,
ग्बर वह हर।।

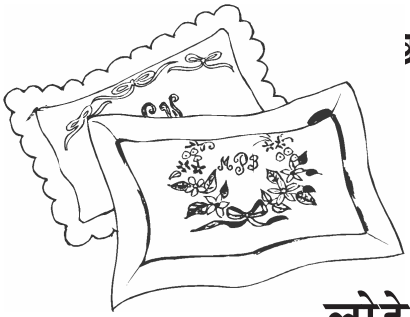

80

लोहे कपड़े का है तन,
हाथ में धारण करते जन।
वर्षा धूप में आता काम,
सबका सम नहिं होता दाम।।
छ अक्षर पर आता नाम,
परोपकार है उसका काम।
बूढ़े - बच्चे, नारी - नर,
प्रयोग करता उसका हर।

81

दो अक्षर का उसका नाम,
करती तरह-तरह का काम।
उसे देखकर बच्चे डरते,
काम नहीं तब गन्दा करते।।
वृद्धों की होती तीसरी टांग,
उसके बल पर्वत जाते लाँघ।।
मारपीट में देती साथ,
जब होती वह मानव के हाथ।।

82

बच्चों का उससे गहरा नाता,
हर मानव के काम है आता।
तरह-तरह का करता भोजन,
चलता प्रतिदिन मीलों योजन।।
कई रूप और रंग प्रकार,
दिखते उसके बारम्बार।।
बच्चे उसके बल हैं बढ़ते,
प्रगति के मार्ग पर चढ़ते।।

83

पैर होते हैं उसके चार,
काम आती है वह हर बार।
सबके घर में वह रहती हैं,
हरपल बोझा वह सहती है।
लकड़ी का है उसका तन,
रखते उसके ऊपर दन।
चार अक्षर का उसका नाम,
परोपकार है उसका काम।।

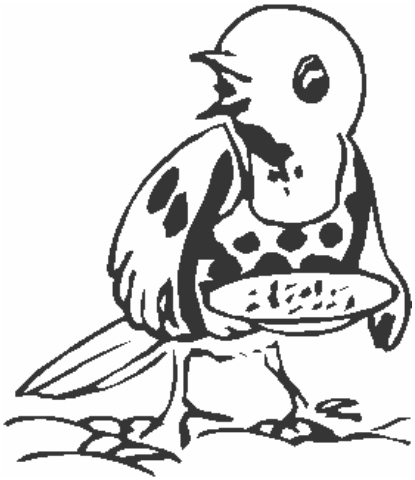

84

प्रतिबिम्ब देखते उसमें जब,
मन मानता सबका तब।
उसकी माया बड़ी विचित्र,
दिखता उसमें सबका चित्र।।

85

परोपकार जीवन का कर्म,
ठण्ड, भगाना उसका धर्म।
तीन अक्षरों का है नाम,
आती है जाड़ों में काम।।

86

पतला होता पानी जैसा,
उसको पीते कुछ लोग।
तन बनता है रोगों का घर,
बिगड़ जाते हैं जोग।
मन असन्तुलित हो जाता है,
होता झगड़ा दंगा।
चोट-फटाक लगती किसी को,
तो कोई लेता पंगा।।

87

सजती नारी के माथे पर,
उसे नहीं पहनता है नर।
कई रूप और रंग-प्रकार,
बदलते उनको बारम्बार।।

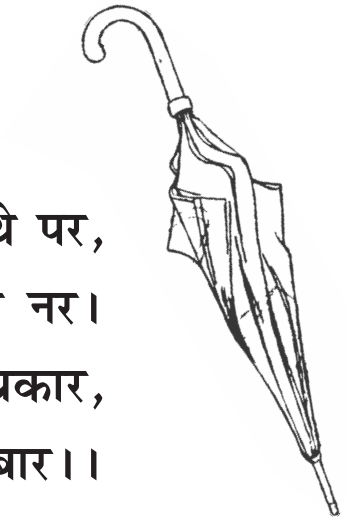

88

उसको पीते हैं जो जन,
व्यर्थ में जाता तन-मन-धन।
रोगों का घर बनता है तन,
हर पल कुण्ठित रहता है मन।।
आँख उठाकर नहिं चल पाता,
कहीं डाँट कहिं मार है खाता।
बताओ उस तरल पदार्थ का नाम,
जो बिगाड़ता हर पल काम।।

89

धुवाँ उड़ता जब पीते हैं,
पीकर मर-मर कर जीते हैं।
फैलाता है यह प्रदूषण,
मानव हारता है जीवन रण।।
बसते हैं रोग इस धुयें में,
मानव गिर जाता कुयें में।।
खुद पर छाया मत पड़ने दो,
समाज में आगे मत बढ़ने दो।।

90

जब करता वस्तू का तोल,
तब होता निर्धारित मोल।
सूक्ष्म दृष्टि से करता न्याय,
देख नहिं पाता यह अन्याय।
न्याय करना समझता यह धर्म,
यही इसके जीवन का मर्म।
इसके नाम में अक्षर तीन,
समझता सम यह सेठ और दीन।

91

दो अक्षर का उसका नाम,
आता साफ- सफाई के काम।
काम तो उसका बड़ा पवित्र,
पर उसको समझते अपवित्र।।
शरीर उसका जब तक नीरोग,
करते सभी है उसका प्रयोग।
बूढ़ा होकर जब मर जाता,
तब खुद कबाड़ वह बन जाता।।

92

दो अक्षरों का उसका नाम,
स्वाद में होता खट्टा।
कई दिनों के संग्रह से,
करते हैं उसकी मट्ठा।।
मिलते कई तत्व हैं उससे,
शरीर नीरोग बनता है जिनसे।
उसका प्रयोग करें सब जन,
उससे अच्छा बनता मन।।

93

एक अक्षर का उसका नाम,
आता है खाने के काम।
बदलता सर्दी पाकर रूप,
पिघलने लगता छूकर धूप।।
भोजन में इसको हैं मिलाते,
कुछ पशुओं को इसे पिलाते।
बनता कई रूप बदलकर,
इसे बनाने वाला है नर।।

94

जन्म होता उसका मथकर,
बिना दूध के जन्म नहीं पर।
उसका सेवन स्वास्थ्य बढ़ाता,
प्रगति पथ पर हमें चढ़ाता।।
अतिप्रिय था वह श्रीकृष्ण को,
चोरी कर भी खाते थे ओ।
नाम बतायेंगे जो बच्चे,
उनको समझेंगे हम अच्छे।।

95

ढाई अक्षर का उसका नाम,
आता है छिड़कने के काम।
जब दवाई देती साथ,
तब दोनों हाथों से बनती बात।।

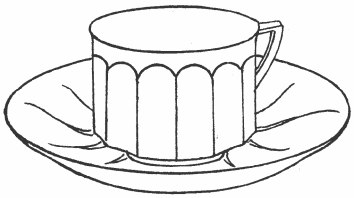

96

उसको पूरा भर देने से,
सारा जग भर जाता।
पानी दूध दही मठ्ठा को,
रखने के काम है आता।
यदि उसको पटल दे कोई,
तो वह दिखता हाथी।
वह खुद कुछ भी काम न करता,
और न उसके साथी।
दो अक्षर का नाम है उसका,
रहता शहर और घर गाँव।
आता तो हर जगह है वह,

97

पेट से उसका आता धुवाँ,
गुड़-गुड़ करे आवाज।
मानव के दिल को जलाता,
सिर पर रखकर साज।

98

तीन अक्षर का उसका नाम,
आता है खाने के काम।
न रहे अन्त तो होती खेती,
मध्य कटे तो जीवन देती।।
बड़ा मधुर वह व्यंजन होता,
इसे खाते सब दादा-पोता।
देवों को भी लगाते भोग,

99

मुँह से वह कुछ नहीं बोलता,
हर एक को वह है तोलता।
पूर्ण रूप से है वह अनपढ़,
पर नहिं करता कुछ भी गड़बड़।।
पक्षपात रहित उसे जानते,
उसका फैसला सभी मानते।
तीन अक्षर का उसका नाम,
न्याय करना है जिसका काम।

100

मानव तब मानव नहिं रहता,
जब जाती पेट के अन्दर।
अक्सर बुरी हरकत करते हैं,
तब समझो उनको बन्दर।।
घर-परिवार बर्बाद हो जाते,
तन-मन रोगों का घर।
तीन अक्षर के इस पेय को,
नहिं लेते जो है श्रेष्ठ नर।

101

चार होते हैं उसके पैर,
उपयोग करते परिचित गैर।
हर एक को मिलता आराम,
उसके पास जाते सब शाम।।
प्राण नहीं उसमें है होता,
धनी-निर्धन उसमें है सोता।
स्वप्न लोक में वह पहुँचता,
बच्चों को वह बहुत है भाता।।

102

नारी की होती है शान,
और बनाती वह पहचान।
माथे पर है उसका घर,
सभी नहीं पहनती हैं पर।

103

बाजार में काम है आता,
हर कोयी उसे साथ ले जाता।
यह जिसके पास नहिं होता,
वह अपनी किस्मत को रोता।।
बनी है दुनियाँ इसकी दास,
सभी चाहते हैं अपने पास।
तीन अक्षर का उसका नाम,
यह करता निर्धारित दाम।

104

सबसे ऊपर उसका घर,
उसे पहनते नारी-नर।
नेताओं की यह पहचान,
उसे पहनकर बढ़ती शान।।
कई रंग,आकार-प्रकार,
बदलते रहते बारम्बार।

105

सूरज होता साथ मे जब,
चमक नहीं पाते हैं तब।
रात अंधेरी होती जब,
मन को भाते हैं ओ तब।।

106

नौ सदस्यों का परिवार,
सबका अलग-अलग है द्वार।
रंग भी सबके दिखते भिन्न,
तरह-तरह के उनके चिह्न।।
प्राणियों पर करते प्रहार,
चलते हैं ओ बिना हि कार।
कोई गरम कोई शीतल,
कोई लाल कोई ज्यों पीतल।।
इस परिवार का मुखिया रवि,

107

कभी तरल कभी कठोर,
उसके अन्दर होता जोर।
ठण्ड लगे तो जम जाता है,
गर्मी पाकर पिघल जाता है।।
उसको गन्दा करना पाप,
लें संकल्प रखेंगे साफ।
दो अक्षर का उसका नाम,
पीने के वह आता काम।।

108

घटता-बढ़ता रहता है,
सर्दी-गर्मी सहता है।
देता शीतलता-प्रकाश,
हर पल रहता है आकाश।।
बच्चों को वह है भाता,
पर कोई पकड़ नहीं पाता।
जिद करते हैं लाकर दो,
[illegible] हैं ऊपर जो।।

109

बिखरे रहते हैं आकाश,
गहरे तमका करते नाश।
दिखते विरल कहीं सघन,
उन्हें देख खुश होता मन।।
सप्तऋषि कोई होता ध्रुव,
फैले रहते पश्चिम-पूर्व।
होता है जब प्रातः काल,
दिख नहिं पाता इनका जाल।

110

कभी वो जल बरसाता है,
और कभी बस तरसाता है।
देखते तो सब हैं उसको,
पर पकड़ में नहिं आता है।।
रहता तो है बहुत ही ऊपर,
पर प्रभाव दिखाता भू पर।
कारण बनता वह वृष्टि का,
हित-अहित निहित सृष्टि का।।

111

आँख उसे देखनहिं पाती,
पर वह खुद हर जगह है जाती।
सबके प्राण टिके उसी पर,
उपयोग उसका करता प्राणीहर।।
धरती पर वह आग फैलाती,
और किसी को आकाश उड़ाती।।
जब वह प्रदूषित हो जाती,
बीमारियाँ मानव के घर आती।।

112

बाँध दिया मानव ने उसको,
प्रदूषित भी कर डाला।
हरती पाप जो मानव का,
बहा रहे उसमें गंदा नाला।
सदियों से कहता आया मानव,
उसको अपनी माता।
गुमसुम कभी रोती रहती,
किसे सुनाये अपनी गाथा।।

113

हर दिन देता ताप-प्रकाश,
दिखता बिल्कुल गोल।
आता-जाता समय से,
नहीं मांगता मोल।।
विटामिन डी का अक्षय पात्र,
प्रकृति में भरता जान।
गर्व से हाथ उठाकर बोलो,
कितनों को है उसका ज्ञान?

114

चीन का शोक उसको कहते,
हर कोई उसको देखता बहते।
करो तुम ऐसा अच्छा काम,
जरा सुनाओ उसका नाम।।

115

कोई उसे देख नहिं पाता,
पर वह हर जगह है जाता।
जीवन उस पर निर्भर करता,
यदि न मिले तो प्राणी मरता।।

116

धरती सारी काँपने लगती,
सोये हुये की नींद है जगती,
छोड़कर भागते हैं सब घर,
बूढ़े बच्चे, नारी और नर।
दबकर कई मर जाते हैं,
जिन्दे प्राणी डर जाते हैं।
उस प्रकोप को क्या कहते हैं?
जिसके दु:ख को सब सहते हैं!

117

नाम में उसके अक्षर तीन,
इनमें रहती सारी मीन।
न रहे अन्त तो खाते सब,
प्रथम कटे, बचते नहिं तब।।
मध्य कटे तो बनता तत्व,
दुनियाँ में है इसका सत्व।
जल का होता यह भण्डार,
करता यह

118

होता उसका निर्मल जल,
हर पल बहती कल-कल-कल।
ऊपर से नीचे को आती,
सागर से मिलने को जाती।।
कयी बहिनें भारत में रहती,
तरह-तरह का कष्ट हैं सहती।
उन्हें पवित्र रखना है धर्म,
सदा करें हम ऐसा कर्म।।
तीन अक्षर का उसका नाम,
आती हैं वै सबके काम।
क्या कहते हैं उनको लोग?

शरीर के अंग

119

बीच में उसका छेद है गोल,
सुन लेता है सबके बोल।
पकड़ कर उसको देते दण्ड,
नहिं कर पाते फिर हैं उदण्ड।।

120

भाई हैं ओ सब बत्तीस,
पर रिश्ता उनका है छत्तीस।
कैंची जैसा करते काम,
दो अक्षर का उनका नाम।।
दो पट के अन्दर हैं रहते,
कई तरह का दुःख हैं सहते।।
रोग लगता उन पर है जब,
मरते एक-एक कर सब।।

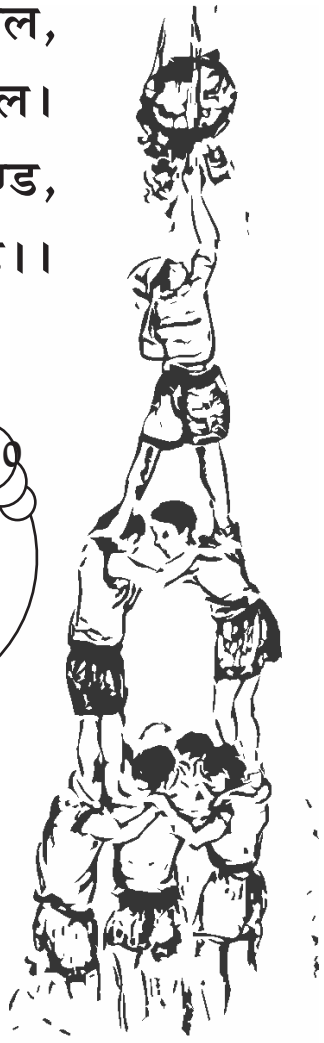

121

स्वाद बताना उसका काम,
लेती है ओ सबका नाम।
बदन लचीला रंग में लाल,
बतलाती हर बात का हाल।।

122

अंगुष्ठिका तर्जनी मध्यमा,
अनामिका कनिष्ठिका नाम।
पाँचों बहिनें मिलकर,
करती हैं सब काम।।
अंगुष्ठिका उनमें स्थूल है,
हर एक की सूक्ष्म पहचान।
कनिष्ठिका कयी बार में,
खुजलाती रहती कान।।
तर्जनी देती ताड़ना,
अनामिका तिलक लगाये।
मध्यमा कहती वह बुद्धिमान,

123

हर क्षण वह बढ़ते रहते,
होते सबके पास।
कई काम आते हैं लेकिन,
फिर भी करते नाश।।
दिखता रंग गुलाबी उनका,
मानों सना हो रक्त।
पर जब काटते उसको हैं,
लाल न दिखता उस वक्त।।
बड़ी कठोर काया है उसकी,
दर्द नहीं जब काटो।
उसका नाम बताओ कोई

124

जब उस पर हैं आग लगाते,
बच्चों को तब दूर भगाते।
होती उससे जोर की चोट,
तब आता जब खर्चें नोट।।

125

सफेद रंग का उसका खोल,
होता है ओ कुछ-कुछ गोल।
मां के पेट से आता है,
मानव उसको खाता है।।
कई तरह से इसको खाते,
अक्सर इसे खरीदकर लाते।
कोई धर्म विरूद्ध मानते,
यह हिंसा है यह जानते।।

126

हाथ में लेकर के हथियार,
करता चेहरे पर प्रहार।
गले लगाता हर बार छुरी,
पर होती नहीं भावना बुरी
आप बतायें उसका नाम
हथियार चलाना जिसका काम
हत्यारा उसको नहिं मानें
काम बुरा यह भी नहिं जानें

127

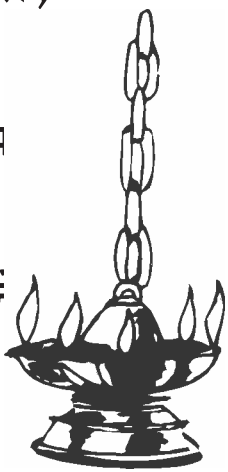

भर कर उसके अन्दर रंग,
खेलते एक दूसरे के संग।
मचाते हैं सब कोलाहल,
फेंकते उससे रंगीन जल।।
मिट जाता अन्दर का भेद,
जब रंग छोड़ता इसका छेद।
स्त्री - पुरूष बूढ़े - बच्चे,
[illegible]

128

एक घर में रहते सब प्राणी,
पर सबकी अपनी अपनी वाणी।
जिनको छेड़ो वही हैं कहते,
बाकी सारे चुप हैं रहते।।
भजन-कीर्तन का है यह प्राण,
महफिल में भर देता जान।
दोनों हाथ से करवाता काम,
छः अक्षर का इसका नाम।

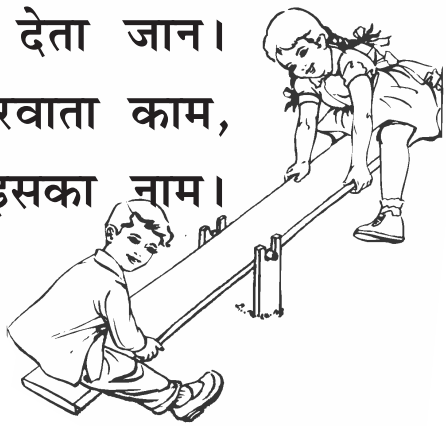

129

रूप कुरूप है बदबूदार,
करता मानव का उद्धार।
फसलें उससे लहलहाती,
खुशी से चिड़ियाँ चहचहाती।।

130

अन्दर उसका खाली रहता,
बाहर रहती आँत।
कई तरह के बोल बोलता,
जब खींचों उसकी ताँत।।

131

काले - भूरे और शुभ,
होते उसके रंग।
बिना यत्न पैदा होते,
हर प्राणी के अंग।।
जितनी बार उनको काटो,
फिर से होते पैदा।
किसी की जेब होती खाली,
और किसी का फैदा।।

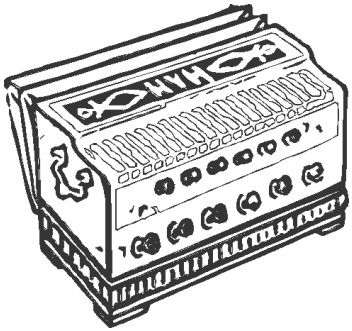

132

पैर नहीं पर जाती दूर,
अक्षरों से है भरपूर।
कोई सड़क कोई वायुवान से,
कोई पढ़ता उसे ध्यान से।।
कोई फाड़कर करता टुकड़े,
और कोई छुआता मुखड़े।।
बहुत भाव इसमें हैं होते,
पढ़कर हँसते कोई रोते।।

133

लिखा राम चरित था जिसने,
वह कौन था राम का दास?
माना ईष्टदेव उन्हीं को,
सीता को माना था खास।।

134

कई रंग आकार - प्रका
बच्चे मांगते हैं हर बार।
हल्का होता उनका भार,
उनके दुश्मन काँटे - तार।।
बड़ा मुलायम होता तन,
तब मिलते जब खर्चो धन।।
उड़ाते हैं उनको आकाश,
कोई रखता उनको पास।।
हवा भरकर उन्हें फुलाते,
फूटने पर बच्चों को रूलाते।
जन्म दिन-शादी में आते काम

135

देश तो बहुत हैं दुनियाँ
सिर्फ उसको ही कहते मात
वह धरती स्वर्ग समान
उसका कण-कण सबको भाता
मानव तो क्या चीज,
देवता भी तरसते उसको।
बुद्धिमान है वह बालक,
नाम आता है जिसको।।

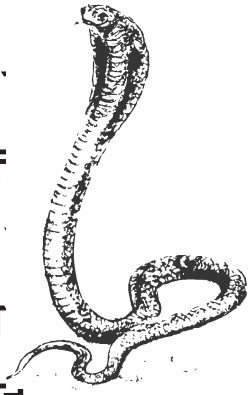

136

गले में सर्पों की माला,
सिर पर चन्दा-गंगा।
हाथ में त्रिशूल-डमरू,
वदन रहता है नंगा।।
करते हैं ओ सबका मंगल,
जग की रहती उन पर आश।
उस देव का नाम बताओ,
जो बसते पर्वत कैलाश।।

137

आँखों से वह नहिं दिखता है,
चिट्ठी-पत्री नहिं लिखता है।
लेकिन पास हमारे रहता,
अच्छी बातें हर पल कहता।।
बसता वह प्रकृति के कण-कण,
सबका ध्यान रखता है हर क्षण।
अनेक नाम-रूप हैं उसके,
प्रकृति है उसकी माया।।
पता नहीं कैसी है सूरत,
कैसी उसकी काया?
जिसके एक इशारे पर,
यह सारी दुनियां चलती है।
नाम बताओ उस सत्ता का,
जिसकी बात

138

कौन सा है वह त्यौहार,
आता श्रावण में हर बार।
बहिन आती भाई के पास,
लेकर के मन में विश्वास।।
बहिन सजाती भाई की कलाई,
इस बन्धन में निहित भलाई।
भाई उसे उपहार है देता,
सुरक्षा का संकल्प है लेता।।

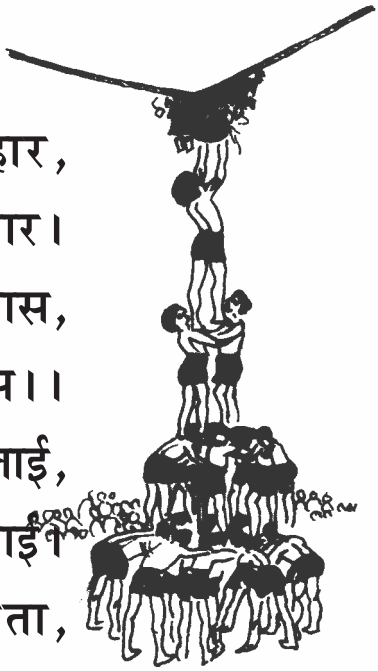

139

जिसने बिना आँख के,
वर्णन किया सटीक।
कृष्ण को आराध्य कहा,
चला बाल कवि की लीक।।
कहा साहित्कारों ने उन्हें,
बाल क्रीड़ाओं का कवि।
नाम बताओ उनका तुम,
हो न सका जैसा अभी।।

140

उस त्यौहार का क्या है नाम?
जिसकी दुनियां में है हाम।
बनाते-खाते विविध पकवान,
समझते उसे मनाना शान।।
दीपक जलाना उस दिन का काम,
करते हैं आतिशबाजी शाम।
चार अक्षरों का उसका नाम,
अधिक मजा आता जब होती शाम।।

141

यमुना के तट पर कौन सा,
बना हुआ महल है।
जिसमें दिन-चाँदनी रात में,
रहती चहल-पहल है।।
शाहजहाँ ने महबूबा की,
याद में बनाया जिसको।।
अच्छा बच्चों तुम्हीं बताओ,
क्या कहते हैं उसको?

142

कार्यशाला प्रयोगशाला,
और कई हैं शाला।
जहां तरासे जाते बच्चे,
वह कौन सी होती शाला?

143

बिना पैर के वह चलता है,
बूंद पड़े तो वह गलता है।
किसी को देता वह संदेश,
कई तरह के उसके भेष।।

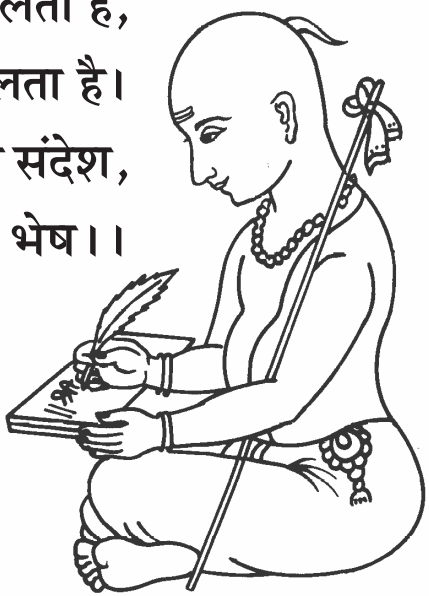

144

वदन पर उसके तीन हैं रंग,
और चक्र है बीच का अंग।
ये सब हमको शिक्षा देते,
बदले में कुछ भी नहिं लेते।।
सब जन खाते इसकी कशमें,
निभा रहे वर्षों से रशमें।
इसे मानते देश की शान,
सबको इस पर है अभिमान।

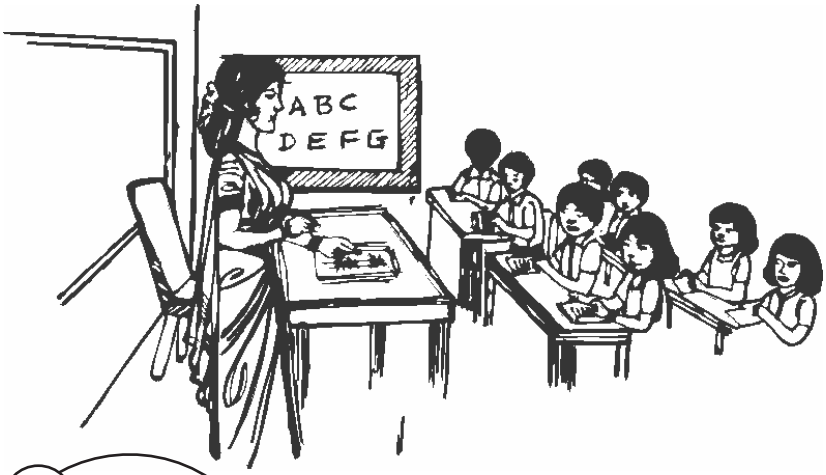

145

रंग लाल आकृति गोल,
खाते उसको लेकर मोल,
रस से भरा रहता है तन,
उसे देख ललचाता मन।।
दूध से उसका मिलता संग,
कैसे बनती रह जाते दंग।
कहते उसको राष्ट्रीय मिठाई,
जो चोरकर खाते होती पिटाई।।

146

चार-अक्षर का उसका नाम,
सदा काटना उसका काम।
बिल के अन्दर वह है रहती,
उससे खून की बूँदें बहती।।

147

कृष्ण की पतिरूप में,
भक्ति की उसने।
उस भक्तिन का नाम बताओ?
जहर पिया जिसने।।

148

नाम में उसके दो हैं अक्षर,
पर संख्या उनकी चार।
ज्ञान अथाह भरा है उनमें,
उम्र है कयी हजार।।

149

स्वाद में मीठा आकार गोल,
जैसा वजन वैसा मोल।
गणेश भगवान को यह है भाता,
मांगलिक कार्यों में काम है आता।।

150

उसके वदन में तीन हैं रंग,
मिला वो हमको लड़कर जंग।
मध्य चक्र देता है ज्ञान,
हरपल रहो मानव गतिमान।
शिक्षा देते तीनों रंग,
करें सम्मान उसका सब संग।
पूरे राष्ट्र का वह प्रतीक,
सब आपनायें उसकी सीख।।

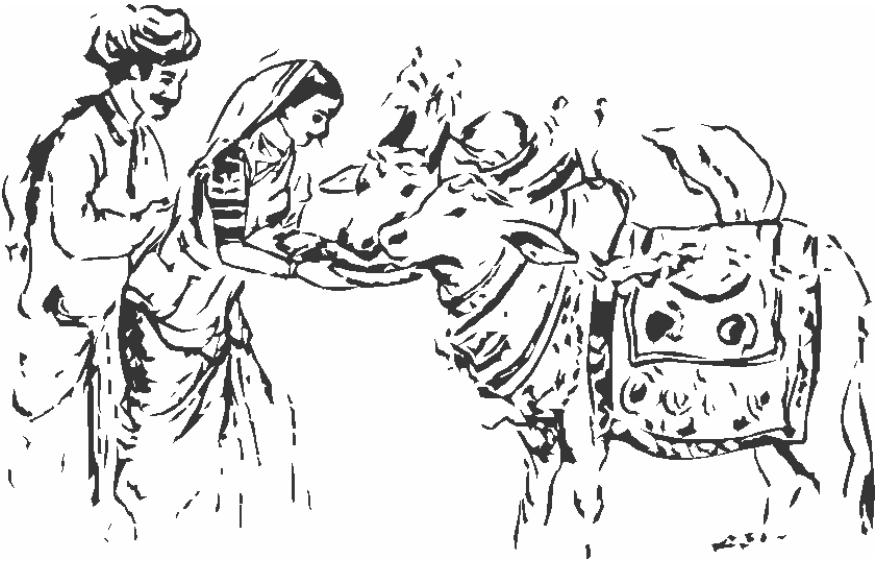

151

खुद तो वह मुश्किल में मरता,
औरों को देता मार।
आवो मिलकर ले संकल्प,
करें उसका प्रतिकार।
पर्यावरण प्रदूषित होता,
जब करते उसका उपयोग।
चार अक्षर उस नाम वाले का,
करें न कभी प्रयोग।

152

सभी जोड़कर भाई सात,
बदलती सिप्ट जब खुलती रात।
स्वभाव छः का एक जैसा,
पर सातवें का नहिं वैसा।।
एक जैसा छः करवाते काम,
उसके बल पर मिलता दाम।
सातवें का चार अक्षर का नाम,
छुट्टी करना उसका काम।।

153

तीन अक्षर का उसका नाम,
आता है लड़ने के काम।
बाँण का जो मिल जाये साथ,
तो तब बनती पूरी बात।

154

सूर्योदय का उसे कहते देश,
कई तरह के उसके भेष।
तीन अक्षर का उसका नाम,
करता कयी प्रकार का काम।।

155

नाम पलट कर बनता राही,
होता बड़ा कठोर।
जगह-जगह इसके पारखी,
और बहुत हैं चोर।।
आभूषण, मूर्तियाँ, बेतारयंत्र हों,
चाहे दूरदर्शन बल्ब रडार।
दुनियाँ के जौहरी-वैज्ञानिक,
करते प्रयोग हर बार।
नाम बताओ उसका बच्चों?
अक्षर मात्र है दो।
सच में दुनियाँ यह मानेगी,

उत्तर

1	कौवा	26	मोबाइल	51	श्रीफल
2	तोता	27	घड़ी	52	अनार (फल)
3	मच्छर	28	बिजली	53	आम
4	बिल्ली	29	पतंग	54	वृक्ष
5	मछली	30	रडार	55	फूलगोभी
6	भैंस	31	वीडिया कैमरा	56	अंगूर
7	तितली	32	हेलीकॉप्टर	57	तुलसी
8	तितलियाँ	33	कम्प्यूटर	58	कटहल
9	खरगोश	34	प्रिंटिंग प्रेस	59	टमाटर
10	सभी पक्षी	35	कैलकुलेटर	60	गुलाब
11	घोड़ा	36	बिजली का पंखा	61	केला
12	हाथी	37	जहाज	62	रूद्राक्ष
13	जूँ	38	रेल	63	प्याज
14	बैल	39	घराट/ पनचक्की	64	चना
15	मुर्गे	40	हाथ की घड़ी	65	केला
16	मक्खी	41	ऑडियो फोन	66	पातगोभी
17	पक्षी	42	गाड़ी	67	ऊनी वस्त्र
18	मधुमक्खी	43	टेलीफोन	68	नाव
19	गाय	44	मशीन	69	स्कूल की घन्टी
20	सांप	45	बन्दूक	70	तव्वा
21	मच्छर	46	बल्ब	71	मेज
22	टेलीविजन	47	मोमबत्ती	72	पेन्सिल
23	ढोलक	48	माचिस	73	घड़ा
24	टेलीफोन	49	चक्की	74	चश्मा
25	दुग्ध मापी यंत्र	50	अनार	75	टोपी

76 जूते
77 कुर्सी
78 दूध
79 अखबार
80 छाता
81 छड़ी
82 झोला
83 चारपाई
84 दर्पण (शीशा)
85 रजाई
86 शराब
87 बिन्दी
88 शराब
89 धूम्रपान
90 तराजू
91 झाड़ू
92 दही
93 घी
94 मक्खन
95 पम्प
96 जग
97 हुक्का
98 हलवा
99 तराजू
100 शराब
101 चारपाई
102 बिन्दी
103 रुपया
104 टोपी
105 तारे
106 नवग्रह
107 जल
108 चन्द्रमा
109 तारे
110 मेघ (बादल)
111 हवा (वायु)
112 गंगा
113 सूर्य
114 ह्वांग हो नदी
115 हवा
116 भूकम्प
117 सागर
118 नदियां
119 कान
120 दाँत
121 जीभ
122 हाथ की ऊँगलियां
123 नाखून
124 पटाखा
125 अण्डा
126 नाई
127 पिचकारी
128 हारमोनियम
129 गोबर की खाद
130 ढोल
131 बाल
132 चिट्ठी
133 तुलसीदास
134 गुब्बारे
135 भारतवर्ष
136 भगवार शंकर
137 ईश्वर
138 रक्षाबन्धन
139 सूरदास
140 दीपावली
141 ताजमहल
142 पाठशाला
143 पत्र
144 राष्ट्रीय ध्वज
145 जलेबी
146 तलवार
147 मीराबाई
148 वेद
149 लड्डू
150 राष्ट्रीय ध्वज
151 पॉलीथिन
152 रविवार
153 धनुष
154 जापान
155 हीरा